महेश शर्मा

फिसल

बहुत जल्दी मे लगता है

निकल पहले निकल ?

ये राहें नम है चिकनी है

बहुत फिसलन भरी है

फिसलना चाहता हे

जा फिसल ।....पहले निकल ।

हवा बदली ,फिजाँ बदली

नजरिये भी सभी बदले

जो कायम रहना है तुझको

बदल , तु भी बदल ।.....पहले निकल ।

जो चेहरे मुस्कराते हैं

इरादे वो छिपाते हैं

जरा दुरी बना उनसे

हंसी पर मत पिघल .।.. पहले निकल ।

उमर गुजरी हे गफलत मे

डुबोया तुझको सोहबत ने

अभी भी वक्त है बाकि

संभल अब भी संभल .।.. पहले निकल

बहुत जल्दी में लगता है

निकल पहले निकल ।

धूप छांव

मैने ऐसी धूप ना देखी

जिससे जुड़ती छाँव नहीं है ।

ऐसी कोई राह ना लम्बी

जिसके बिच कोई गाँव नही है ।

रात अन्धेरी गरजे बादल

छुपे वहीं पर चन्दा तारे ।

फिर क्यों मन उदिग्न , चित्त को

क्योँ घेरे है संशय सारे ।

राते कितनी भी काली हो

सुरज से अलगाव नहीं है । ऐसी कोई राह .....

ओ मन मेरे शान्त बना रह

ईश्वर पर विश्वास ना खोना ।

जिसने दिये तुझे दारूण दुख

एक दिन होगा उनको रोना ।

हरदम जीते अन्यायी ही

ऐसा तो कोई दाँव नहीं है । ऐसी कोई राह .....

मैने ऐसी धुप ना देखी

जिससे जुड़ती छाँव नहीं है

ISSN:2583-8849